मुसलमानों के बीच एकता: समय की बड़ी ज़रूरत

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अली ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहूश्शरीफ
अनुवादक – मु0 र0 आबिद

आज मुसलमान और मानव होने से हम हज़रत मुहम्मद स॰ के आश्रित हैं और केवल हम ही नहीं, पूरी मानवता को उनकी आवश्यकता है, क्योंकि परम पूज्य नबी स॰ सब संसारों के लिए दया (रहमतुन लिल आलमीन) है न कि मुसलमानों के लिए दया। सच्चाई तो यह है कि पूरा मानवत–जगत हज़रत मुहम्मद स॰ की दयाओं, कृपाओं और प्रदानताओं के साये में जीवन बिता रहा है। 'रसूलता' (ईश–दूतत्व) के रूप में जो भी सन्देश आपने मानवता को दिया जिसका सार कुर्आन पाक के रूप में है, आज हमारे हाथों में है और हम इससे लाभ पा सकते हैं।

हज़रत का आह्वाहन और आपका रास्ता

हज़रत ने मानवता के लिए मोक्ष का रास्ता खोला, इसे सुधार का मार्ग दिखाया और मानव जगत को एक ऐसे रास्ते पर पैर बढ़ाने और चलने को उत्साह दिया जिस पर पांव बढ़ाने से मानवता की सभी कठिनाइयों और संकटों का समाधान हो सकता है। मानवता–जगत के बहुत से ऐसे गहरे घाव और रोग और बहुत सी ऐसी पीड़ाएँ हैं जो किसी एक समय से जुड़ी नहीं हैं। मानवता को न्याय की ज़रूरत है, उसे मार्गदर्शन की आवश्यकता है और वह ऊँचे मानव आचरण का अभिलाषी है। निचोड़ यह है कि मानवबुद्धि को परमेश्वर की ओर से भेजे जाने वाले नबियों की मदद की आवश्यकता है। यह वह रास्ता है जिसे हज़रत स॰ ने उसको पूरे विस्तार और संमार्ग की पूरी पात्रता के साथ खोला है। जो चीज़ इसका कारण बनी है और आगे भी इसका कारण बनेगी कि मनुष्य परमेश्वर के इस सन्मार्ग और सहायता से लाभ न उठाए, वह हम मनुष्यों से ही जुड़ी है, वह हमारी अज्ञानता से जुड़ी है। इसमें हमारी कमी, सुस्ती और आलस का बड़ा रोल है और इसमें हमारी लालसा और मनोकामनाओं को बहुत लेना देना है। मनुष्य अगर आँख खोले, बुद्धि से काम ले, अपने साहस को ऊँचा करे, पैर बढ़ाये और चले तो यह रास्ता खुला है। इस तरह मानवता की सभी गहरे घावों, पुराने रोगों और कठिनाइयों का इलाज हो सकता है। अल्लाह के इस बुलावे के टक्कर में शैतानी बुलावा है जिसने अपनी सेना, मित्रों और चेलों को नबियों से टकराने के लिए हर काल में इकट्ठा किया है। यही वजह है कि मनुष्य दुविधा में पड़ा है कि किस रास्ते को अपनाये।

इस्लामी जागरुकता की एक नई तरंग

एक लम्बी बेपरवाही की नींद और कई सदियों तक इस्लामी शिक्षाओं के साफ़ पारदर्शी झरने से दूर रहने के बाद आज पूरा मुस्लिम समुदाय इस्लाम की शरीयत और धर्मविधान को नई तरह और नए कोण से देख रहा है। आज पूरी मानवता, इस्लाम जगत और मुस्लिम समुदाय

ने इस्लामी आदेशों और शिक्षाओं की ओर अपनी आँखें खोल ली हैं, इसलिए कि मनुष्य की अपनी गढ़ी कल्पनाओं और दर्शनों का जर्जरपन और कमज़ोरी खुलकर सामने आ गयी है। आज दुनिया इस्लाम, इस्लामी शिक्षाओं से जुड़ कर अपने विकास और प्रगति में मानवता जगत में सबसे आगे हो सकती है। आज दुनिया मुस्लिम समुदाय के बढ़ते हुए क़दमों को देख रही है, मनुष्य ने अपने ज्ञान विकास के कारण आचरण, आध्यात्मिकता और धर्म की आत्मा को भुला दिया है। मानवता की ज्ञान–विज्ञान में प्रगति और विश्व की सच्चाइयों पर मनुष्य की नई दृष्टि मुस्लिम समुदाय की गति के लिए सबसे अच्छी ज़मीन बराबर कर सकती है। इस्लामी शिक्षाएँ और ज्ञान आज मुस्लिम समुदाय की पहुँच में हैं। इसी तरह नबी स॰ की सीरत (सदावृत्ति/चरित्र) नबी के कथन और सबसे बढ़कर क़ुर्आन पाक इस्लाम जगत के पास हैं जिससे इस्लामी दुनिया आगे बढ़ सकती है।

विश्व की घटनाओं को देखते हुए मैं यहाँ आपकी सेवा में दो तीन मूलबिन्दु निवेदन करूँगाः

1– पहली सच्चाईः इस्लाम–जगत की जागरुकता

पहला बिन्दु इस्लाम–जगत की जागरुकता है। आज से सौ साल पहले इस्लाम–जगत के सुधारक लोग इस्लाम–जगत के पूरब पच्छिम के विभिन्न देशों में ग़रीबी की हवाओं और वातावरण में जो बाते करते थे वे आज आम लोगों की ज़बानों पर चलन के रूप में आ चुकी है। यानि 'इस्लाम की ओर वापसी, क़ुर्आन की पुनर्जीवन, 'एक समुदाय' की धारणा और इस्लाम–जगत का सम्मान, सकत और सत्ता। यह सभी चीज़े मुस्लिम समाजों के सुधारक अपने–अपने सीमित स्तरों पर ख़ास–ख़ास लोगों के बीच एक दूर वाले लक्ष्य के रूप से बताते थे, आज वही लक्ष्य सबकी ज़बानों पर हैं और मुसलमानों के बीच जीते जागते चलन के रूप में तरंगे मार रहे हैं। आज एक–एक मुस्लिम देश पर आँख डालिए ख़ासकर युवक, पढ़े लिखे लोग और खुले विचार वालों के बीच यह 'चलन' ज़िन्दा हैं। यह बात इस ओर इशारा करती है कि इस्लामी पहचान अभी तक दिलों में ज़िन्दा है। इस्लामी गणतन्त्र ईरान में इस्लाम की सफलता और वरीयता इस क्रम में एक बहुत बड़ी मिसाल है। ईरान की जनता ने अपने बलिदान और बलिहारी, दृढ़ता और इस्लामी मर्यादा के झण्डे अपने हाथों लेने से सभी मुस्लिम–जातियों में एक नया प्राण फूँक दिया है और उन्हें उनके भविष्य की आशा दिलायी है। आप इस आशा के परिणामों को दुनिया के कोने–कोने में देख सकते हैं। यह झुटलाई न जाने वाली सच्चाई है।

2– दूसरी सच्चाईः विश्व की दादागीरी (धौंस) की इस्लाम से खुल्लम खुल्ला दुश्मनी

एक और न झुठलाई जाने वाली सच्चाई यह है कि इस्लाम जगत से विश्व शक्तियों की दादागीरी की दुश्मनी पहले से ज़्यादा गम्भीर, और तेज़ हो गई है और सारी दिशाओं पर छा गई है। संस्कृति (Culture) के रूप से राजनैतिक प्रोपेगण्डे, राजनैतिक कारवाईयों से, वित्तीय (Economical) और आर्थिक (Financial) प्रकार से भी। इसलिए मुस्लिम समुदाय की जागरुकता विश्वशक्ति और घमण्डवाद दादागीरी के लिए बहुत बड़ा ख़तरा बन गई है। घमण्डवादी शक्तियाँ यानी जिन्होंने दुनिया के एक बहुत बड़े हिस्से को अपनी सत्ता के पन्जे में दबोचे हुए हैं, अन्तर्राष्ट्रीय ज्योनवादी (Zionism) के जाल, अमरीका की

धौंस, धमकी की राजनीति और उनकी वित्तीय संस्थाएँ और कम्पनियाँ जो विश्व स्तर पर वर्चस्व ज़माने वाले इस जाल के समर्थक और पक्षधर है, इस्लाम जगत में दिन पर दिन बढ़ने वाली जागरुकता से डरी सहमी है और अपने डर को ज़बान से स्वीकार भी करती है।

आज विभिन्न मोर्चों से इस्लाम पर जो हमले किये जा रहे हैं, उनके ऊपर एक क़ायदे की गणित है और पहले से तैयार की हुई संगठित योजना से जुड़े है। यह कोई संयोग की बात नहीं है कि अमेरीका की विदेशमन्त्री इस्लाम विरूद्ध जो बात करती हैं उसी बात को ईसाई धर्म का सबसे बड़ा पादरी (पोप) अपनी ज़बान से दुहराता है। हम यहाँ व्यक्तियों को चर्चा का विषय बनाना नहीं चाहते बल्कि उन मसलों पर विश्लेषण (Analysis) और हल प्रस्तुत कर रहें। यह चीज़ें कभी भी हल्की तो नहीं हो सकती। प्रकाशनों में इस्लाम के रसूल स० की मान मर्यादा के प्रति दुस्साह और अपमान, 'कठोर धर्म' का इस्लाम पर आरोप लगाना, मुसलमान समुदायों जातियों पर आरोप गढ़ना और दूसरी ओर Cross का समर्थन करने वाले राजनैतिक लोगों का खुल्लम खुल्ला मुसलमानों के विरोध ज़हर उगलना और अपनी दुश्मनी को खुलकर बताना, इनमें कोई एक भी संयोग या हल्केपन की बात नहीं है। आज दुश्मन एकजुट हो मोर्चा बनाकर मुस्लिम समुदाय के विरूद्ध अपनी दुश्मनी के तीर लगातार चला रहा है और ईरान में इस्लामी क्रान्ति के बाद इस दुश्मनी और हमलों में बहुत तेज़ी आ गई है।

3– तीसरी सच्चाई: दादागिरी, दबी और जागरुक मुसलमान छाया हुआ

यह तीसरी सच्चाई भी बहुत महत्व की और ध्यान देने वाली है। वह यह कि इस आमने–सामने की लड़ाई में बाहरी और भौतिक (Materialistic) तथ्यों के विपरीत छायी हुई सामर्थ वाली शक्तियाँ जो सैन्य और आर्थिक शक्ति से मालामाल है, मुस्लिम समुदाय और इस्लाम–जगत की जागरुकता और गतिशीलन की आगे झुक गई है। यह बात बहुत ध्यान देने वाली है कि मध्यपूर्व (Middle East) ख़ासकर फिलस्तीन (Palestine) का मसला और इस क्षेत्र के दूसरे मसले जैसे इराक़ और लेबनान (Lebnon) के मसले अमरीका की दादागीरी शक्ति अपने सारे के सारे भौतिक संसाधनों के साथ मैदान में आये और हार जाये, यह एक जीती हुई सच्चाई है।

यह कौन मान सकता है

फ़िलस्तीन में भी दादागीरी वाली शक्तियों ने मुँह की खाई। यह कौन समझ सकता है कि एक 'जिहादी संगठन' जो यहूदी राज्य से लड़ रहा है और उसके विरोध और दुश्मनी का नारा लगाता है, फिलस्तीन में सत्ता में आ जाएगा। यह कौन विश्वास कर सकता है कि विश्व की महान सेना शक्ति का लेबनान पर किया जाने वाला हमला 'एक छोटे से ईमान वाले समूह' के हाथों सिर्फ 33 दिन में बहुत बड़ी अपमान वाली हार देखेगा। कौन इस बात पर विश्वास कर सकता है कि अमरीका इराक़ में अपनी सारी मेहनत और जतन और वहाँ पर अपनी बड़ी सेना–शक्ति के होते हुए वहाँ अपने उद्‌देशों को पा नही सकेगा। किसने अटकल लगाई थी कि अमरीका मध्यपूर्व के अरब जगत पर क़ब्ज़े और क्षेत्र के राज्यों और देशों का सामना करने के लिए इराक़ पर क़ब्ज़ा जमा न सकेगा? लेकिन यह सब होकर रहा। इस लड़ाई में मुँह की उसने खायी जो देखने में अपनी सेना–शक्ति, देखने की सत्ता, डालर और पोढ़ी

अर्थ–व्यवस्था (Economy) और राजनीति के बल से मालामाल है और यह अपने में खुद एक सच्चाई है।

इस्लामी पहचान पर दादागीरी हमलों में इस्लामी पहचान ही भारी रही है। इन सभी सच्चाइयों को सामने रखना चाहिए। यह जो कहते हैं कि सच्चाईयों को समझने और वास्तविक्ता को देखिए तो सच्चाई और वास्तविकता यही है जिसे अपने समाधानों में देखना चाहिए और फैसलों के समय जिन पर ध्यान देना चाहिए। यह झुटलाई न जाने वाली सच्चाइयाँ हैं जिन्हें हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। इस्लाम–जगत अगर चाहता है कि अपनी सफलता के लिए एक जीता हुआ आन्दोलन चलाए तो उसे बहुत सी चीज़ों को अनिवार्य रूप में मान लेना होगा जिनमें पहली अनिवार्य बात 'मुसलमानों के बीच एकता और मेल' है।

मुसलमानों को आपस में लड़ाना दादागीरी की एक चाल है

भाईयों को आपस में लड़ाना दादागीरी की पहली चाल है जो पुराने काल से काम में लायी जाती रही है। 'फूट डालो और राज करो' (Divide and Rule) भी उसकी एक पुरानी राजनीति है। हम सब ने कहा है और हम सब जानते हैं लेकिन फिर भी दुख है कि ऐसे अवसर आते हैं कि दुश्मन हम पर इसी चाल से हमला करता है और वह भी सिर्फ मन की चाहतों के पीछे रहना, ग़लत विश्लेषण, समाधानों, छोटी सोच, निजी हित को सामूहिक हित के ऊपर रखने या अल्पकालीन लाभ के लिए लम्बे काल के लाभों की बलि, देने से। आज आप ज़रा देखें कि दादागीरी की एक राजनीति कि फिलस्तीनियों को फिलस्तीनियों से लड़ाना, उनके बीच गृहयुद्ध पैदा करना और उनमें फूट डालना, शिया मुसलमानों को सुन्नी मुसलमानों से लड़ाना और अरबी व अजमी (अ–अरबी) को एक दूसरे से भिड़ाना, इसलिए पहले चरण का इलाज करना चाहिए। हम अपनी जगह मुसलमानों के बीच एकता को मुस्लिम समुदाय की एक मूल ज़रूरत समझते हैं और हमने इस साल को राष्ट्रीय एकजुटता और मुसलमानों के बीच एकता (National Integeration and Unity among Muslims) का साल घोषित किया है। मुसलमानों के बीच एकता पूरे इस्लामी जगत के लिए बहुत ज़रूरी है। सबको एकता से काम लेना चाहिए और एक दूसरे की मदद करना चाहिए, राज्यों को भी और जनता को भी।

इस्लामी राज्य उस व्यापक स्तर पर मुसलमानों के बीच एकता के लिए मुस्लिम समूहों और जातियों की सक्षमता और योग्यता से अच्छा फायदा उठा सकते हैं।

मुसलमानों के बीच एकता के रास्ते की रुकावटें

बहुत सी चीज़े इस एकता में रुकावट और अड़चन हैं। इनमें सबसे ऊपर टेढ़ी समझ और सच्चाइयों से जानकारी न होना है। हम एक दूसरे के हाल और दशाओं से अनजान हैं, एक दूसरे के ख़िलाफ आशंका में पड़े हैं और एक दूसरे के विचारों और विश्वास के बारे में ग़लत चीज़ों को समझ बैठे हैं। शिया सुन्नी के बारे में और सुन्नी शिया के बारे में भ्रम का शिकार हो जाते हैं। इसी तरह एक मुसलमान जाति दूसरी मुसलमान जाति के बारे में और एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी के बारे में बुरे विचार का शिकार है और दुश्मन इस बुरे विचार को लगातार फैला रहा है। बहुत खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि बहुत से लोग इसी दुर्विचार, ग़लत विश्लेषण और दुश्मन की पूरी योजना को न देखने की वजह से उसके इस खेल का हिस्सा बन जाते हैं और दुश्मन ऐसे

ही लोगों से अच्छी तरह फ़ायदा उठाता है। कभी एक छोटा सा प्रेरक वजह बनता है कि मनुष्य कोई बात कहे, कोई रवैया अपनाये या कोई ऐसा काम कर डाले कि दुश्मन अपनी चाल में उससे लाभ उठाता है और भाइयों के बीच दूरी ज़्यादा कर देता है।

मुसलमानों के बीच एकता के लिए एक विश्व चार्टर की ज़रूरत

इस कठिनाई का ज़रूरी और असली इलाज 'मुसलमानों के बीच एकता' है। उलमा, धर्मगुरुओं और इस्लाम के खुले विचार वालों को सर जोड़ कर बैठना चाहिए कि वे 'मुसलमानों के बीच एकता' का एक चार्टर तैयार कर सकें जिससे टेढ़ी समझ वाले और द्वेष तासुब वाले लोग और इधर उधर से जुड़ा कोई व्यक्ति या कोई सम्प्रदाय बे रोक–टोक मुसलमानों की एक बड़ी संख्या या सम्प्रदाय के लिए इस्लाम से बाहर होने का फ़तवा न दे सके और उनके बारे में कफिर होने का फतवा निकाल न सके।

'मुसलमानों के बीच एकता' के चार्टर का बनाया जाना उन्हीं बातों से जुड़ा है जिनकी माँग इतिहास आज उलमा, धर्मगुरुओं और इस्लाम के खुले विचार वालों से कर रहा है। अगर आप ने यह काम पूरा न किया तो आने वाली पीढ़ियाँ ज़रूर आपकी ख़बर लेंगी। आप इस्लामी पहचान को ख़त्म करने और मुस्लिम समुदाय में अलगाव डालने के लिए दुश्मन की चालों को देख रहे हैं। आइये, मिल बैठिये, इसका इलाज कीजिये और जड़ों (मूल) को टहनियों पर वरियता दीजिये। उलमा, धर्मगुरुओं और इस्लाम के खुले विचार वालों की ज़िम्मेवारी छोटी मोटी बातों में सम्भव है क्योंकि एक ही धर्म के लोग एक विचार के मानने वाले न हों, तो उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन इसके होते हुए बहुत सी बातें मिली हुई, साझे की (Common) है। इसीलिए उन्हें चाहिए कि इन्हीं को अपनी एकता का केन्द्र बनायें। इस्लाम के उलमा को चाहिए कि वे दुश्मन की चालों से सावधान रहे। हर धर्म (सम्प्रदाय) के ख़ास–ख़ास लोग बैठें और ज्ञान के माहौल में धर्म की चर्चा करें, विचार विमर्श करें, लेकिन आम जनता को इस विचार विमर्श में न मिलाये, दिलों को एक दूसरे के लिए मैला न करें (द्वेष न करें) और विभिन्न इस्लामी सम्प्रदायों, मुस्लिम जातियों और एक ही जाति के इस्लामी गुटों और जत्थों को एक दूसरे का दुश्मन न बनायें।

दादागीरी इस्लाम की दुश्मन है

जो चीज़ दादागीरी के लिए महत्व का कारण है वह इस्लाम है। दुश्मन चाहता है कि इस्लाम को मिटा दें और हमें इस बात को समझना चाहिए। वह लोग जो शिया और सुन्नी में किसी तरह का भेद नहीं रखते, हर वह जाति, हर वह गुट, हर वह जत्था और हर व्यक्ति जो इस्लाम से ज़्यादा लगाव रखता है, दुश्मन उसी से ज़्यादा ख़तरा समझता है और ठीक ही डरता है। सच्चाई तो यही है कि इस्लाम दादागीरी छाने और उसके वर्चस्व पा लेने के लक्ष्यों और उद्देश्यों के लिए एक बहुत बड़ा ख़तरा है। इस्लाम दूसरी जातियों के लिए कोई ख़तरा नहीं है, जबकि दुश्मन इसके उलटा प्रोपेगण्डा कर रहा है।

इस्लाम के विरूद्ध दुश्मन का प्रोपेगण्डा

दुश्मन कला, प्रोपेगण्डा, राजनीति, मीडिया और संचार–साधनों के द्वारा लगातार प्रोपेगण्डा कर रहा है कि इस्लाम दूसरी जातियों का दुश्मन है और वह धर्मों और मतों को मिटा देना चाहता है, जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है। इस्लाम वही धर्म है जब दूसरी जातियों पर शासक हुआ तो उस धर्म वालों ने इस्लाम की कृपा का धन्यवाद दिया और कहा आप हम पर हमारे पिछले शासकों से ज़्यादा नर्म हैं। 'मशामात' के इसी क्षेत्र में जब इस्लामी विजेताओं ने पैर रखा, तो इस क्षेत्र के

यहूदियों और ईसाइयों ने कहा कि आप मुसलमान हम पर बहुत मेहरबान हैं। इस्लाम दया–करूणा का धर्म है और सारे संसारों के लिए दया और बरकत (समृद्धि/मंगल) है। इस्लाम ईसाई मत से कहता है: ***''तआलौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना व बैनकुम''*** यानी अपने और उनके बीच बराबरी को ठहराता है। इस्लाम दूसरी अमुस्लिम जातियों और धर्मों का विरोधी नहीं बल्कि अत्याचार, अन्याय, दादागीरी और उसके अधिपत्य और नियन्त्रण का विरोधी है जबकि अत्याचारी और दादगीरी वाली शक्तियाँ इस सच्चाई को उलटा बनाकर दुनिया के सामने प्रस्तुत कर रही हैं। ''हालीवुड के फिल्मी जगत'' से लेकर मीडिया और प्रोपेगण्डे के साथ शस्त्र और सैन्य शक्ति की सभी सम्भावनाओं और सन्साधनों से दुश्मन फायदा उठाते हुए इस सच्चाई के उलटा प्रोपेगण्डा (दुष्प्रचार) कर रहा है। दादागीरी के आँखों में शिया और सुन्नी सब बराबर हैं, उसे अपना निशाना बनाते हैं चाहे वह ख़तरा शिया से हो या सुन्नी से। दादागीरी फिलस्तीन में 'हमास' को उसी दृष्टि और कोण से देखती है जैसे वह लेबनान में 'हिज़्बुल्लाह'' को देखती है और उस के विरूद्ध काम करती है। वह सुन्नी है और यह शिया हैं (लेकिन दोनों दुश्मन की निशाने पर)। धार्मिक और इस्लाम के कर्मबद्ध मुसलमान दुनिया के जिस हिस्से में हों, दादागीरी की दृष्टि में बराबर हैं, चाहे वे सुन्नी हों या शिया। क्या हमारा एक दूसरे को गुट की या साम्प्रदायिक दृष्टि से देखना एक बुद्धिवाला काम है? क्या हम आपस में भिड़ जायें? एक दूसरे की शिकायत करें और अपने संयुक्त (Common) दुश्मन को भूल जायें जो हमें ख़त्म करना चाहता है? क्या इस तरह अपनी शक्तियों को गंवाना ठीक है?

अल्लाह के वादे पर सच्चे विश्वास के साथ मैदान में आ जायें

इस्लाम जगत को चाहिए कि वह अपना खोया हुआ सम्मान, ऊँचाई, दृढ़ता और स्वाधिकार और ज्ञान–प्रगति को पाने और आध्यात्मिक शक्ति को लेने के लिए जतन करे यानी धर्म से लगाव करे, अल्लाह पर भरोसा करे और उसकी मदद पर विश्वास के लिए प्रयास करे।

यह उसका वादा अपने बन्दों के लिए अन्तिम और निश्चित है और पूरा होकर रहेगा। यह ख़ुदा का सच्चा वादा है कि ***''वल यन्सुरन्नल्लाहु मन यन्सुरुहू''*** (जो भी अल्लाह की मदद करेगा तो वह उसकी अवश्य और निश्चय ही मदद करेगा) इसलिए इस्लाम जगत को चाहिए कि इस वादे पर पूरा विश्वास रखते हुए मैदान आ जाए। यह काम केवल हथ्यार को हाथ में उठाना नहीं है बल्कि वैचारिक, बौद्धिक और कार्यात्मक हैं, और यह एक सामूहिक और राजनैतिक काम है कि सब अल्लाह के लिए और 'मुसलमानों के बीच एकता' के लिए क़दम बढ़ायें। इस काम से मुस्लिम जातियाँ भी फायदा उठायेंगी और इस्लामी राज्य भी। अगर इस्लामी राज, मुस्लिम समुदाय के अथाह सागर में मिल जायें तो उनकी कसबल में बढ़ौत्तरी हो जायेगी न कि अमेरिका के राजदूत या अमुक अमेरिका के राजनीतिज्ञ पर भरोसा करने से ये सभी चीज़े उन्हें प्रकृति नहीं दे सकती। लेकिन अगर यही इस्लामी राज मुस्लिम समुदाय के साथ मिल जायें और एक दूसरे के पास आ जायें तो ऐसे अवसर पर दादागीरी के लिए अवसर नहीं आने देंगे कि वह एक इस्लामी राज को अपना निशाना बनाते हुए उसे निरस्त करके एक दूसरे इस्लामी राज की ढूँढ में निकल पड़े। इस समस्या की ओर सबको ध्यान देना चाहिए और इस्लामी राजों को एकजुट होना चाहिए और यह बात अच्छी तरह जान लें कि वे एकजुट हो सकते हैं। □□□